

शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता के प्रभाव का अध्ययन

¹मीनाक्षी शर्मा & ²डा० सुरक्षा बंसल¹शोधार्थी, शिक्षा विभाग, अरुणाचल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज, नामसाई, अरुणाचल प्रदेश²शोध निर्देशिका, शिक्षा विभाग, अरुणाचल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज, नामसाई, अरुणाचल प्रदेश

ARTICLE DETAILS

Article History

Published Online: 10 November 2018

Keywords

मेरठ जिला, शिक्षक-प्रशिक्षणार्थी, पर्यावरण जागरूकता एवं प्रभाव

ABSTRACT

शोध लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरण जागरूकता के प्रभावों का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों से 04 शिक्षक कुल 48 शिक्षक, प्रत्येक विकासखण्ड के दो महाविद्यालय के प्राचार्य, 04 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में कुल 120 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया। शोध क्षेत्र **79.17 प्रतिशत प्राचार्य, 81.24 प्रतिशत शिक्षक, 81.24 प्रतिशत अभिभावक एवं 82.50 प्रतिशत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों** का अभिमत है कि शिक्षक-प्रशिक्षण स्तर पर अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुमाश्रित परिपूर्ण होगा।

प्रस्तावना-

पर्यावरण से सम्बन्धित अनेकों प्रसंग तथा व्याख्यायें हमारे वेदों, उपनिषदों तथा पुराणों में भरे पड़े हैं। प्राचीन ऋषि-मुनियों की पूरी दिनचर्या ही प्रकृति पर निर्भर थी। जहाँ अरण्यों में उपलब्ध सामग्रियों से ही उनके निवास-गृह कुटिया का निर्माण होता था, वहीं वनीय फल-फूलों पर उनका जीवन आधारित था। नदियों में स्नान होते थे तथा उन्हीं झुरमुटों के मध्य एकान्त स्थल पर वृक्षों के नीचे पूजा-पाठ तथा यज्ञादि क्रिया-कलाप होते थे। इन्हीं सघन वनों के गुरुकुल आश्रमों में शिष्य विद्या ग्रहण करते थे। इसी प्रसंग का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने भगवान राम के विषय में लिखा है कि- **‘गुरु गृह पढ़न गये रघुआई, अल्पकाल विद्या सब आई’** राजगृहों से राजपुत्रों को ब्रह्मचर्य व्रत के पालन तथा शिक्षा ग्रहण करने के लिए इन्हीं अरण्य स्थित गुरुकुल आश्रम (पाठशालाओं) रूपी में भेज दिया जाता था। राजकुमार वेदों, पुराणों तथा धनुर्विद्या इत्यादि ज्ञान से सम्पन्न होकर इनसे निकलते थे। गुरुकुल आश्रम स्थित जीव-जन्तुओं, पेड़, फल-फूलों तथा गुरु के यज्ञादि कार्यों सम्बन्धी सम्पूर्ण दायित्वों का निर्वहन करते थे तथा एक योग्य ब्रह्मचर्य व्रतधारी को सम्पूर्ण ज्ञान से मंडित था, परिपूर्ण करके उन्हें गृहस्थ आश्रम के योग्य बनाकर ही अपने दायित्वों से मुक्त होते थे। प्राचीन काल में पर्यावरण में किसी भी प्रकार का असन्तुलन नहीं था क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरणीय तत्वों को देवता मानकर उनकी पूजा करता था हानि पहुँचाने को कौन कहे? प्रत्येक का तन-मन तथा धन से रक्षा करना नैतिक तथा धार्मिक कर्तव्य था। जल, वायु, सूर्य, पृथ्वी, आकाश एवं विभिन्न वनीय वृक्षों को देव तुल्य स्थान प्राप्त था। गोस्वामी तुलसीदास जी ने इन तत्वों को विशेष स्थान देते हुए लिखा है कि- **‘क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा’** ये ऐसे पाँच तत्व हैं जिससे सृष्टि का निर्माण होता है। इससे ही पर्यावरण विज्ञानियों ने बाद में **‘पारिस्थितिकी’** नाम दिया। उच्च मूल के भारतीय विद्वान **फादर कामिल बुल्के** ने अपने शोध-ग्रन्थ **‘रामकथा उद्भव और विकास’** में कहा है कि **‘बाल्मीकि रामायण तो जैसे पर्यावरण की महागाथा ही है’**

वैदिक काल को अरण्य संस्कृति का स्वर्णकाल कहा जाता था, उन दिनों वन देवी **‘अरण्यानी’** की पूजा अनिवार्य थी। वन देवी **‘प्रकृति’**

का पर्याय मानी जाती थी। वनों की विशेष महत्ता तथा सभ्यताओं का विकास भी इन्हीं के छाया तले हुआ था, ऐसा स्वीकार किया जाता है। भारतीय आर्य परम्परा तो सदैव इसकी पूजा कर रही है। अरण्य, तपोवन तथा कुंज क्रमशः ज्ञानस्थली, तपोस्थली तथा कर्मस्थली माने जाते थे। स्कन्द पुराण तथा कठोपनिषद् के प्रसंगानुसार **‘पीपल’** वृक्ष की जड़ में ब्रह्म, तने में विष्णु तथा टहनियों में शिव का वास होना माना जाता है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी पीपल का वृक्ष औषधि गुण सम्पन्न तथा ग्रीष्मकाल में विशेष शीतलता प्रदायक माना गया है। इसकी छाया मोहक तथा अनुलनीय होती है। हमारे ऋषि-मुनियों ने इनकी गुण सम्पन्ता को स्वीकार करते हुये इसकी पूजा का विशेष विधान बनाया था, जो आज भी समाज में प्रचलित है। ऋग्वेद में सोम वृक्ष तथा अथर्ववेद में पलाश वृक्ष की पूजा का विधान है। **‘माँ शीतला’** को पलाश वृक्ष की देवी माना गया है।

विकास और प्रगति के नाम पर हमने प्रकृति और उसके निरन्तर चलते रहने वाले चक्र को गड़बड़ा दिया है और मानवकृत सुविधाओं के अहम् के आधार पर हम उसकी उपेक्षा कर रहे हैं। सत्य यह है कि बिना अच्छे प्राकृतिक पर्यावरण के हम न तो सुखमय वर्तमान जी सकते हैं और न ही भविष्य की शान्तिप्रद आश्वस्तता सोच सकते हैं। यह ठीक है कि आज की वैज्ञानिक प्रगति और विकसित तथा विकासशील देशों की परस्पर आगे बढ़ने की होड़ में हर देश को विकास के पथ पर बढ़ना है, पर विकास को **‘पर्यावरण के विनाश’** के नाम पर तौलना भी उचित नहीं है। विनाश रहित विकास हमारा ध्येय और नारा होना चाहिए। यह स्पष्ट है कि जब हम पर्यावरण प्रबन्ध की बात करते हैं तो हमें उसे पारिस्थितिकी के परिप्रेक्ष्य में ही सोचना चाहिए।

फहीमुद्दीन अहमद ने अपने लेख में लिखा है- **‘विश्व के विकास के लिए तकनीकी प्रगति एक राष्ट्रीय आवश्यकता है, अतः उसे रोकना नहीं जाना चाहिए, आवश्यकता इस बात की है कि पर्यावरण का प्रबन्ध और उसकी योजनाएँ पारिस्थितिकी अवधारणाओं, तरीके और कार्य-प्रणालियों की समझ पर आधारित किसी भी देश में जनसंख्या विशेषज्ञ, जिन्हें सामान्यतया अंग्रेजी के प्रचलित नाम डेमोग्राफर्स के नाम**

से जाना जाता है, उस देश की घटती-बढ़ती जनसंख्या तथा देश में उपलब्ध विभिन्न संसाधन, भौगोलिक स्थिति, लोगों का रहन-सहन और रीति-रिवाज के आधार पर यह आधिकारिक रूप से बताने में सक्षम होते हैं कि अगले वर्षों में इस देश की क्या स्थिति होगी? कौन-सी विपदायें या घटनायें आने वाली या घटित होने वाली हैं और उनका देशवासियों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? उनका यह सामाजिक दायित्व होता है कि वे देश के शासन को सभी वस्तुस्थितियों से अवगत करा दें। निःसन्देह इस प्रकार के निर्णय में जनसंख्या की बहुत अधिक भूमिका होती है।'

हमारे देश में भी हाई स्कूल स्तर से असंतुलित होते हुए पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित करने के लिए विभिन्न विषयों में पाठ्यक्रम रखे गये हैं। उच्च स्तर पर इन पाठ्यक्रमों की विविधता तथा प्रभावशीलता और अधिक बढ़ाई गई है। पर्यावरण प्रदूषण से लगातार गड़बड़ाते प्रकृति चक्र को संतुलित कर विरासत में सुन्दर और व्यवस्थित भविष्य हेतु पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करना एवं प्राकृतिक संसाधनों का विशाल भण्डार भी लगभग सीमित है, उनके उचित तथा बुद्धिमतापूर्ण उपयोग से शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को लाभान्वित करना शोध का औचित्य है। शिक्षक-प्रशिक्षण स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा जो हम विद्यार्थियों को दे रहे हैं उसे वे किस सीमा तक ग्रहण कर पाते हैं। पर्यावरण शिक्षा से शिक्षक-प्रशिक्षकों की प्रवृत्तियों, आदतों, विचारों, कौशल्लों, अभिवृत्तियों, रुचियों और व्यवहार में क्या और कितना परिवर्तन हो रहा है तथा समग्र शिक्षा पर इसका प्रभाव किस सीमा तक वांछित दिशा में हो रहा है। यदि किसी प्रकार की रुकावट है तो क्यों? यह रुकावट किस प्रकार दूर की जा सकती है? एवं भविष्य में क्या परिवर्तन किया जाय कि लक्ष्य की प्राप्ति हो सके।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व-

पर्यावरण भौतिक वातावरण का द्योतक है। आजकल के यान्त्रिक और औद्योगिक युग में इसको प्रदूषण से बचाना अनिवार्य है। सामान्य जीवन प्रक्रिया में जब अवरोध होता है तब पर्यावरण की समस्या जन्म लेती है। यह अवरोध प्रकृति के कुछ तत्वों के अपनी मौलिक अवस्था में न रहने और विकृत हो जाने से प्रकट होता है। इन तत्वों में प्रमुख हैं जल वायु, मिट्टी आदि। वर्तमान समय में मनुष्य औद्योगिकीकरण और नगरीकरण में इस तरह से गुम हो चुका है कि वह स्वार्थपूर्ति के लिए प्रकृति का अत्यधिक दोहन करने लगा है और पर्यावरण को असंतुलित बनाए हुए है। परिणामस्वरूप मनुष्य को प्रदूषण, बाढ़, सूखा आदि आपदाओं का सामना करना पड़ता है। यदि मनुष्य प्रकृति द्वारा प्रदत्त अमूल्य तत्वों की श्रृंखला का सुरक्षित तरीके से उपभोग करे तो पर्यावरण को संरक्षित रखा जा सकता है।

विश्व के सभी देशों का दायित्व है कि वे वैज्ञानिकों द्वारा दी गई, चेतावनियों को ध्यान रखते हुए नीतियाँ बनाए एवं विश्व कल्याण हेतु सर्वमान्य समझौतों को क्रियान्वित करवाए। सम्पोषणीय विकास की चुनौती अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दा है। वन्य जीव संरक्षण को भी सम्पोषणीय विकास की राजनैतिक धारणा के संदर्भ में रखा जाता है। जल संरक्षण हेतु नीति निर्धारण व क्रियान्वयन आवश्यक है। जल संरक्षण एक बड़ी चुनौती है। गरीबी, पिछड़ापन, स्वास्थ्य आदि जैसे पक्ष भी सम्पोषणीय विकास व राजनैतिक धारणा से सम्बन्धित चुनौतियाँ हैं। पर्यावरण शिक्षा द्वारा आम जन में सम्पोषणीय विकास की चेतना जागृत करना एवं सन्तुलन का महत्व समझाना अत्यन्त आवश्यक है।

शोध के उद्देश्य-

शोध समस्याओं के समाधान की दिशा में शैक्षिक अनुसंधान के लिए कुछ निश्चित उद्देश्य होते हैं, जिनको प्राप्त करने की दिशा में शोध उन्मुख होता है। पर्यावरण शिक्षा द्वारा जनजातीय विद्यार्थियों की मानसिक, शारीरिक चेतना का विकास करना। छात्रों की प्राकृतिक पर्यावरण की प्रेरणा देना।

शोध का सीमांकन-

मेरठ जिला अपनी गौरवमयी संस्कृति वैभव खनिज सम्पदा और भौगोलिक स्थिति के कारण जाना जाता है। इसमें कुल 12 विकासखण्ड हैं। मेरठ जिले में साक्षरता 69.72 प्रतिशत है जिसमें पुरुष साक्षरता 79.24 तथा महिला साक्षरता 59.26 प्रतिशत है। जिले में कुल 102 शिक्षक-प्रशिक्षण (बी०टी०सी०) महाविद्यालय है जिनमें अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की कुल संख्या लगभग 6759 है। जिले के कुल 102 महाविद्यालयों में से 24 महाविद्यालयों का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा अध्ययन हेतु किया गया।

प्रस्तुत शोध का न्यादर्श-

शोध लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शासन द्वारा संचालित पर्यावरण जागरूकता के प्रभावों का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों से 04 शिक्षक कुल 48 शिक्षक, प्रत्येक विकासखण्ड के दो महाविद्यालय के प्राचार्य, 04 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में कुल 120 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धांतिक एवं अनुमाश्रित परिपूर्ण होगा।

प्रस्तुत शोध की अध्ययन पद्धति-

शोधार्थी का शोध वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण मूलक अनुसंधान की श्रेणी में आता है।

प्रस्तुत शोध के उपकरण एवं विधि-

शोधार्थी ने अपनी शोध समस्या से सम्बन्धित तथ्यों के विषय में गहन एवं विश्वसनीय जानकारी प्राप्त करने हेतु अनेक व्यक्तियों से साक्षात्कार किया है। शोध क्षेत्र मेरठ जिले के शिक्षक-प्रशिक्षण स्तर के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिए शिक्षक-प्रशिक्षक, प्राचार्य तथा अभिभावक से इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन, परिणाम व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया।

चयनित विधियों में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है-

1- साक्षात्कार पत्रक

2- प्रश्नावली

प्रदत्तों का सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या-

शोध क्षेत्र में संकलित किये गये प्रदत्तों का सारणीयन कर उनका विश्लेषण एवं व्याख्या की गई प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्नानुसार है-

तालिका-01

शिक्षक-प्रशिक्षण (बी०टी०सी०) स्तर पर अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन
(प्राचार्य साक्षात्कार पत्रक के आधार पर)

क्रस०	विकासखण्ड का नाम	चयनित प्राचार्यों की संख्या	बी०टी०सी० में अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन			
			सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।		सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है।	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1-	खरखौदा	02	02	8.33	00	00
2-	रजपुरा	02	02	8.33	00	00
3-	सरधना	02	02	8.33	00	00
4-	मेरठ	02	02	8.33	00	00
5-	मवाना	02	02	8.33	00	00
6-	माछरा	02	02	8.33	00	00
7-	रोहटा	02	02	8.33	00	00
8-	सरूरपुर	02	01	4.166	01	4.166
9-	हस्तिनापुर	02	01	4.166	01	4.166
10-	जानी	02	01	4.166	01	4.166
11-	दौराला	02	01	4.166	01	4.166
12-	परीक्षितगढ़	02	01	4.166	01	4.166
योग		24	19	79.17	05	20.83

शोध क्षेत्र के शिक्षक-प्रशिक्षण (बी०टी०सी०) स्तर पर अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन के अर्न्तगत प्राचार्य के साक्षात्कार के पश्चात् पाया कि 79.17 प्रतिशत

प्राचार्यों पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है साथ ही 20.83 प्रतिशत प्राचार्यों पर इसका सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

तालिका-02

शिक्षक-प्रशिक्षण (बी०टी०सी०) स्तर पर अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन
(शिक्षकों के साक्षात्कार पत्रक के आधार पर)

क्रस०	विकासखण्ड का नाम	चयनित शिक्षकों की संख्या	बी०टी०सी० में अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन			
			सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।		सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है।	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1-	खरखौदा	04	04	8.33	00	00
2-	रजपुरा	04	04	8.33	00	00
3-	सरधना	04	04	8.33	00	00
4-	मेरठ	04	04	8.33	00	00
5-	मवाना	04	03	6.25	01	2.08
6-	माछरा	04	03	6.25	01	2.08
7-	रोहटा	04	03	6.25	01	2.08
8-	सरूरपुर	04	02	4.161	02	4.161
9-	हस्तिनापुर	04	02	4.161	02	4.161
10-	जानी	04	03	6.25	01	2.08
11-	दौराला	04	04	8.33	00	00
12-	परीक्षितगढ़	04	03	6.25	01	2.08
योग		48	39	81.24	09	18.76

शोध क्षेत्र के शिक्षक-प्रशिक्षण (बी०टी०सी०) स्तर पर अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन के अर्न्तगत शिक्षकों के साक्षात्कार के पश्चात् पाया कि 81.24 प्रतिशत

शिक्षकों पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है साथ ही 18.76 प्रतिशत शिक्षकों पर इसका सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

तालिका-03

शिक्षक-प्रशिक्षण (बी०टी०सी०) स्तर पर अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन
(अभिभावकों के साक्षात्कार पत्रक के आधार पर)

क्रस०	विकासखण्ड का नाम	चयनित अभिभावकों की संख्या	बी०टी०सी० में अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन			
			सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।		सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है।	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1-	खरखौदा	04	04	8.33	00	00
2-	रजपुरा	04	04	8.33	00	00
3-	सरधना	04	04	8.33	00	00
4-	मेरठ	04	04	8.33	00	00
5-	मवाना	04	03	6.25	01	2.08
6-	माछरा	04	03	6.25	01	2.08
7-	रोहटा	04	03	6.25	01	2.08
8-	सरूरपुर	04	02	4.161	02	4.161
9-	हस्तिनापुर	04	02	4.161	02	4.161
10-	जानी	04	03	6.25	01	2.08
11-	दौराला	04	04	8.33	00	00
12-	परीक्षितगढ़	04	03	6.25	01	2.08
योग		48	39	81.24	09	18.76

शोध क्षेत्र के शिक्षक-प्रशिक्षण (बी०टी०सी०) स्तर पर अध्ययनरत अभिभावकों के पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन के अन्तर्गत अभिभावकों के साक्षात्कार के पश्चात् पाया कि 81.24 प्रतिशत

अभिभावकों पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है साथ ही 18.76 प्रतिशत अभिभावकों पर इसका सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

तालिका-04

शिक्षक-प्रशिक्षण (बी०टी०सी०) स्तर पर अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन
(शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के साक्षात्कार पत्रक के आधार पर)

क्रस०	विकासखण्ड का नाम	चयनित शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की संख्या	बी०टी०सी० में अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन			
			सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।		सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है।	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1-	खरखौदा	10	10	8.33	00	00
2-	रजपुरा	10	07	5.83	03	2.50
3-	सरधना	10	10	8.33	00	00
4-	मेरठ	10	10	8.33	00	00
5-	मवाना	10	09	7.51	01	0.83
6-	माछरा	10	08	6.67	02	1.67
7-	रोहटा	10	07	5.83	03	2.50
8-	सरूरपुर	10	08	6.66	02	1.67
9-	हस्तिनापुर	10	09	7.51	01	0.83
10-	जानी	10	08	6.67	02	1.67
11-	दौराला	10	06	5.00	04	3.33
12-	परीक्षितगढ़	10	07	5.83	03	2.50
योग		120	98	82.50	22	17.50

शोध क्षेत्र के शिक्षक-प्रशिक्षण (बी०टी०सी०) स्तर पर अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन के अन्तर्गत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के साक्षात्कार के पश्चात् पाया कि 82.50 प्रतिशत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़

रहा है साथ ही 17.50 प्रतिशत अभिभावकों शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों पर इसका सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

भावी अनुसन्धानकर्ताओं हेतु सुझाव-

- 1- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में सैद्धान्तिक ज्ञान को प्रोजेक्ट कार्य एवं प्रायोगिक कार्यों द्वारा छात्रों के मस्तिष्क में पहुँचाया जाना चाहिए। ताकि उनमें वैज्ञानिक धारणा का विकास हो सके।
- 2- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की आवश्यकता एवं पाठ्यक्रम के अनुसार समय-समय पर पर्यावरण शिक्षा के बारे में शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षक, पर्यावरणीय प्रदूषण एवं संरक्षण की नवीन गतिविधियों से परिचित हो सके।
- 3- शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान कर उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरूक तथा पर्यावरण को संतुलित बनाये रखने के कारणों से अवगत कराने हेतु क्षेत्रीय जलवायु, भूमि, वन सम्पदा, नदियों तथा पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले कारकों पर आधारित ज्ञान प्रदान करना चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

- 1- गर्ग, रूपकिशोर, पर्यावरण शिक्षा, उदयपुर (भारत) पर्यावरण सामुदायिक केन्द्र, 1988, पृष्ठ 36.
- 2- जरीना और अब्दुल समद (2013) सेकेण्डरी स्कूल में विज्ञान के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता पर पर्यावरण विशेषज्ञों के सर्वेक्षण का अध्ययन।
- 3- कपिल, एच०के० (1996) 'सांख्यिकी के मूल तत्व', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- 4- रोली, एस० (1995) 'जबलपुर जिले में पर्यावरण शिक्षा की दिशा में हाई स्कूल के शिक्षकों की जागरूकता की दृष्टिकोण की जाँच का अध्ययन'।